भारतीय ज्ञानपीठ काशी

ज्ञानपीठ-ग्रन्थागार

"णाणं पयासयं"

कृपया—

(१) मैले हाथोंसे पुस्तकको स्पर्श न कीजिये। जिल्दपर काग़ज़ चढ़ा लीजिये।

(२) पन्ने सम्हाल कर उलटिये। थूकका प्रयोग न कीजिये।

(३) निशानीके लिये पन्ने न मोड़िये, न कोई मोटी चीज़ रखिये। काग़ज़का टुकड़ा काफ़ी है।

(४) हाशियोंपर निशान न बनाइये, न कुछ लिखिये।

(५) खुली पुस्तक उलटकर न रखिये, न दोहरी करके पढ़िये।

(६) पुस्तकको समयपर अवश्य लौटा दीजिये।

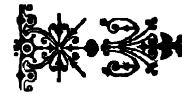
"पुस्तकें ज्ञानजननी हैं, इनकी विनय कीजिये"

अर्हँ श्रीमहावीर ग्रंथमाला तृतीय पुष्पम् ३

 दशपूर्वधर भगवानश्रीभद्रगुप्ताचार्यविरचिता 



विद्यारत्न महानिधिः



प्रकाशकः—श्रीमहावीर ग्रंथमालाके मानदमंत्री

S. K. Kotecha

मुद्रकः—रामचंद्र गोविंद पावसकर, मालक श्रीराम प्रिंटिंग प्रेस धुळें.

प्रथमावृत्ति
२५ पंचविंशतिः

वीरसंवत २४६२

विक्रमाद्व १९९२

मुल्यं २५
पंशविंशतिः रूप्यकः

❀ जैन समाजमें अपूर्व क्रान्ति. ❀

श्रीमहावीर जैनग्रंथमालाकेपुस्तकें प्रकाशित होगये. पढिये–अवश्य पढिये और मनन करिये.

ज्ञात होकि श्रीमहावीरग्रंथमालाके मुख्यतया दो विभाग करनम आये हैं. जिसके प्रथम विभागमें आजतक अप्रकाशित अध्यात्मग्रंथोंका और सूत्रग्रंथोंका प्रकाशन दूसरे विभागमें श्रीगणधर महाराज पूर्वधर और पूर्वाचार्योंके अनूभूत सिद्ध हैमकल्प, औषधिकल्प, मंत्रकल्प, आदि ग्रंथोंका प्रकाशन करवाना सुनिश्चित किया है. स्वाध्याय प्रेमी कोईभी महानुभाव अगर इसग्रंथमालाकेग्राहक बनना चाहेतो नियमित फीसके पांच रुपये भरकर ग्राहक श्रेणीमें अपना नाम लिखवा सकते है. अभीतक इसग्रंथमालाके अनकरीब पचास महानुभाव स्थायीरूपसे ग्राहक हो चुकेहै. इसग्रंथकी इस सूचनाके अतिरिक्त और कोई जाहिर सूचना देनेमें नहीं आयेगी. क्योंकि इसमें गुप्तविद्या होनेके कारण इसका जितना सदुउपयोग होना चाहिये संभवहैकि सर्व साधारण जनताकेद्वारा उससे कहीं अधिक इसका दुरूपयोग हो इसीलिये हमने इसग्रंथकी अभी अधिकप्रतियाँन छपवाकर थोडीसी प्रतियाँ छपवाई है; बाद इनप्रतियोंके खपजानेके यदि ग्राहकोंकी अधिक संख्यामें मागे आईतो दुसरीदफेमें हम अधिक संख्यामें प्रतियाँ छपवा सकेंगे. स्वाध्याय प्रेमी सज्जन ग्रंथमालाकी ग्राहक श्रेणीमें शीघ्रातिशीघ्र अपना नाम लिखवाकर यश और पुण्यके भागी बनेंगे क्या मै ऐसी उम्मीद करसकताहूं ?

निवेदकमंत्री—S. K. Kotecha, Dhulia.

अर्हँ

श्रीदशपूर्वधरभद्रागुप्ताचार्यविरचिता श्रीविद्यारत्नमहानिधि मंत्रद्वात्रिंशिकाकल्पः

प्रणम्य श्री महावीरं । विद्यारत्नमहानिधिम् ॥ मंत्रद्वात्रिंशिकां वक्ष्ये । सर्वकार्यप्रसाधिकाम् ॥ १ ॥

भाषा—भगवान श्री महावीर प्रभुको नमस्कार करके दशपुर्वधर भगवान श्रीभद्रगुप्ताचार्य सर्वकार्यको सिद्धकरनेवाली श्री विद्यारत्नमहानिधि नामकी अनुभुत मंत्र द्वात्रिंशिका कल्प फरमाते है.

स्तम्भनंमोहमुच्चाटं, वश्याकर्षणजम्भनम् । विद्वेषणं मारणंच, शान्तिकं पौष्टिकं तथा ॥ २ ॥

मुक्तिमार्गंच शास्त्रेऽत्र, भणिष्यामियथाविधिम् । एकाग्रीभूय भो भव्याः, श्रुयतां भक्तिपूर्वकम ॥ ३ ॥

भाषा—इस शास्त्रमें स्तंभन, मोह उच्चाटन, वश्य, आकर्षण, जंभन, विद्वेषण, मारण, शांतिक, पौष्टिक, मुक्तिमार्ग इतनी वस्तुका विधिपुर्वक कथन करुंगा, भोभव्यजीवो भक्तिपुर्वक एकाग्रमनसे सुनो.

सर्वज्ञाभं महामंत्रं, सर्वकल्याणकारकम् । सर्वकर्मकरं चैव, साधयेच्च यथाविधिम् ॥ ४ ॥

भाषा—सर्वज्ञकेसमान सर्व कल्याणकरनेवाले, सर्व कर्मको करनेवाले इस महामंत्रकी साधना यथाविधि करनी चाहिये.

ब्रह्म-त्रिलोक-कमला, अकारो नभसोक्षरम्। रेफविन्दुकलाक्रान्तं, नमश्च मंत्रमुच्यते ॥ ५ ॥

भाषा—ब्रह्म-ॐ, त्रिलोक-ह्रीँ, कमला-श्रीँ, अकार-अ, नमसोक्षरम्-ह, रेफाविन्दुकलाक्रांत-र्हं मंत्रोद्धारः ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हंनमः—यह सर्वज्ञसदृश मंत्र है.

पीतं स्तम्भेऽरुणं वश्ये, क्षोभने विद्रुमप्रभम्। कृष्णं विद्वेषणे ध्याये-त्कर्म घाते शशिप्रभम् ॥ ६ ॥

भाषा—स्तंभन करनेमें पीत ध्यान, वशिकरणमें रक्त ध्यान, क्षोभन करनेमें प्रवालसदृश ध्यान, विद्वेषणमें कृष्ण ध्यान, कर्मनिर्जरामें चन्द्रमाके सदृश ध्यान करना चाहिए.

द्वादशसहस्त्रजापे, दशांशहोमेन सिद्धिमुपयाति। मंत्रो गुरुप्रसादात्, ज्ञातव्य स्त्रिभूवने सारः ॥ ७ ॥

भाषा—बाराहजार जाप करके उसका दशांश आहूति देकर गुरुमहाराजकी कृपासे मंत्र सिद्ध होताहै जो त्रिभुवनमे सार रूप है.

(प्रथम चंद्रबल तथा ग्रहबल देखके फिर सुनक्षत्र (रवि पुष्ययोग, सिद्धियोग, अमृतसिद्धियोग, नवरात्रि आदि) में कार्य परत्वे यथा दिशामें शुद्ध भुमिमें सवागज प्रमाण भुमि खोदे अशुद्ध वस्तु (हाड रोमवगैरा) कीनिवृर्ति करे पिछे मट्टीको शुद्ध जलसे लिंपन करके प्रतिष्ठा करावे. चार दिशा गज प्रमाण सार्धहस्त अधोमुख, दीप, धुप, पुष्प कुंकुमका छाटादेना, कुंड षट्कोन बनाना, पीछे खदिरांगारसे कुंड भरे, अखंड धुप दीप पुर्ण कलशकी स्थापना करे, कुमारीकन्याके पास हिरवनकी कपासीका सुत कताकर २१ सरकाडोरेकी अष्टगंधसे पुजा करके फिर बत्ती बनावे.

दीपेंकम सवासेर घृत भरकर चकमकसे ज्योति प्रगटावे. एक उत्तर साधकको साथ लेकर बैठे, पुर्ण ब्रह्मचर्य व्रत पालन करे. देव तथा गुरु प्रति भक्तिरखे, उत्तर साधकको असन, पान, वस्त्र, आभरण इत्यादिसे भक्ति पुर्वक सन्मान करें प्रत्याख्यान, अष्टम, आचामाम्ल वा एकासन दुध चावलसे ७।११ तथा २१ दिनकरे. सर्वथा मौन रहे. सवालक्ष [१२५०००] जापकरे दशांश आहूती देवे. पद्मासनमें बैठके जाप करे वहांपर स्त्री बाल वृद्ध इत्यादि प्रवेश न करे स्त्री मुख न देखे देह वस्त्र इत्यादि शुद्ध रखें, दधि, दुग्ध, शर्करा, घृत, मधु, अखरोट, बदाम, पिस्ता, निमजा, चिरोंजी, खारक, सिंघोडा, श्रीफल, खीरनी, द्राक्ष, इक्षुखंडा, और, कपुर, कस्तुरी, अंबर, लोवान, गुगल, श्वेत, रक्त, चंदन, पीत-पट्टकुल, जव, प्रियुंग, गोरोचन वरुणकाष्ट, मलियागिरी चंदन, कालंबरी, पुष्पः—कमल, मोगरा, चंपा केवडा, केतकी, मोलसरी, सेवंती, जासवंद, [जासुद] मखा, नागरवेलीपत्र, अशोकपत्र, पत्रशटम्, सर्वजातिके फुल इत्यादि साम-ग्रीसे यंत्रराजकी पुजाकरे आहूती देवे.

उत्तर दिशा सन्मुख जापकरे, आसन, वस्त्र, माला वगैरे पीतलेवे पीतपुष्पसे जापकरे, पीतनैवेद्य लेवे तथा पीतध्यान करनेसे लक्ष्मी प्राप्त होतीहै.

पुर्वदिशा सन्मुखजापकरे सर्वसामग्री श्वेतलेवे ध्यानश्वेत करे, तो सद्गति, वंशवृद्धि, प्रजावश्य, सर्व जन वश होवे.

पश्चिम दिशा सन्मुख जापकरे सर्व सामग्री लाललेवे रक्तध्यान करनेसे उपद्रव टलताहैं ओर जगत वशहोता है.

दक्षिण दिशा जापकरे तो सर्व सामग्री कृष्णलेवे क्रुरध्यान करे, तथा कृष्ण धतुरेकाफुल, अर्कफुल काला-करके खल, तिल, कपासकी आहुतिदेवे. अरीठा या बेहडाकी लकडी, सशानमृत्तिका वरुणछाल, चउवटाकिधुली, घूक

काग मालाकी लकडी का होमकरे. मधु, सरसव, लुण, गुह्योदेवदारु, मरी, सिंदुर भैसागुग्गुल आदि सर्वका हवन करे. तो शत्रुका पराजय होवे या शत्रुका मरण होवे.

विद्याप्रवाद् पूर्वस्य, तृतीय प्राभृतादयम् । उद्धृतःकर्मघाताय, श्रीवैरस्वामिसूरिभिः ॥ ८ ॥

भाषा—दशमाविद्याप्रवाद पूर्वके तीसरे प्राभृतसे वज्रस्वामि महाराजने कर्ममलका नाश करनेके लिये इस मंत्रका उद्धार किया है.

नासाग्रे प्रणवं शुन्य—मनाहत मितित्रयम् । ध्यायन् गुणाष्टकं लब्धा, ज्ञान माप्नोति निर्मलम् ॥ ९ ॥

भाषा—नाशिकाके अग्रभागमे प्रणव–ॐ शुन्य–ह, अनाहत–अ [ॐ ह अ] इन तीन अक्षरका ध्यान आठ गुणको प्राप्त कराताहै और निर्मल ज्ञानको प्राप्त कराताहै.

शङ्खकुन्दशशाङ्काभं, स्त्रीनमून् ध्यायत सदा । समग्र विषय ज्ञान–प्रागल्भ्यं जायते सदा ॥ १० ॥

भाषा—शंख, मोगरेका पुष्प तथा चंद्रमाके समान उज्वल ध्यान, जो हरवखत करताहै वह सर्व विषयके ज्ञानकी प्रागल्भ्यताको प्राप्त होता है.

द्विपार्श्वप्रणवंद्वन्दं, प्रान्तयो मायया वृतम् । सोहंमध्ये विमुर्धानं, अर्सँह्रीकारं विचिन्तयेत् ॥ ११ ॥

भाषा—इसश्लोकमें [ह्रीँ ॐ ॐ ह्रीँ अर्सँह्री हंस] यह मंत्र है. इसका हरहमेश ध्यान करना चाहिये.

कामधेनु मिवाचिन्त्यं, फलं सपादनक्षमम् । अनवद्यां जपेद्विद्यां, गणभृद्वदनोद्गताम् ॥ १२ ॥

भाषा–गणधरमहाराजके मुखसे निकलेहुये कामधेनुके समान अचिन्त फलदेनेवाली, पापरहित विद्याका जप करना चाहिये.
मंत्रोद्धार मंत्रः—ॐ जोग्गे मग्गे तच्चे भुए भव्वे भविस्से अन्ते पख्खे जिणपार्श्वेस्वाहा

षट्कोणेअप्रतिचक्रे, फडिति प्रत्येकमक्षरम् । सव्येन्यसेद्विचक्राय, स्वाहा वाह्येऽपसव्यतः ॥ १३ ॥

भुतान्तं विन्दुसंयुक्तं, तन्मध्ये न्यस्यचिन्तयेत् । नमोजिणाण मित्याद्यैः, ॐ पूर्वैर्वेष्टयेद्बहिः ॥ १४ ॥

भाषा—षटकोणयंत्र बनावे उसमे "अप्रतिचक्रेफट्" यहमंत्र दक्षिणकीतर्फसे अनुक्रमसे भरे "विचक्राय स्वाहा" यहमंत्र अपने डावेतरफसे उतरताभरे भुतांत–हकारको विन्दु संयुक्त करके कर्णिका [मध्य] मे स्थापन करके ॐ नमोजिणाणं इत्यादि मंत्रसे बाहर वेष्टनकरे फीर ध्यानकरे वेष्टन मंत्र ॐ नमो जिणाणं, ॐ नमो ओहिजिणाणं, ॐ नमो परमोहिजिणाणं, ॐ नमो सव्वोहिजिणाणं, ॐ नमो अनंतोहिजिणाणं, ॐ नमो कुट्ठबुद्धीणं, ॐ नमो वीअबुद्धीणं, ॐ नमो पयानुसारीणं, ॐ नमो संभिन्नसोआणं, ॐ नमो उज्जुमईणं, ॐ नमो विउलमईणं, ॐ नमो दसपुव्वीणं, ॐ नमो चोद्दसपुव्वीणं, ॐ नमो अट्ठंगमहानिमित्तकुसलाणं, ॐ नमो विउव्वणइड्ढिपत्ताणं, ॐ नमो विज्जाहराणं, ॐ नमो चारणाणं, ॐ नमो पण्हसमणाणं, ॐ नमो आगासगामीणं, ॐ ह्रौँ ह्रौँ श्रीँ ह्रीँ धृतिकीर्ति सिद्धिलक्ष्मी स्वाहा. बाहरसे चारोतर्फ वेष्टनकरे यह सिद्धचक्र हुया.

कर्मदावहुताशस्य, प्रशान्ति नववारिदम् । गुरूपदेशाद्विज्ञाय, सिद्धचक्रं विचिन्तयेत् ॥ १५ ॥

भाषा—गुरुमहाराजके उपदेशसे जानकर कर्मरूपी दावानलके शांतिकेलिये नवीन मेघकेसमान इससिद्ध चक्रका चिन्तन-करना चाहिये (इसचक्रको नवपद चक्र नही समझना)

चीर्णैरपि चिरं कालं, तपोभिरमलैः सदा । कथंचित् प्राप्यतेपुंभिः, महामंत्रो महागुणः ॥ १६ ॥

भाषा—चिरकालतकनिर्मल तपस्याकरनेवालेको कथंचित् महागुणवाला यह महामंत्र प्राप्त होता है. मंत्रोद्धार " आसिआ उसा नमः "

अनाख्येयमसाधूनां, साधुनामापियत्नतः । कथ्यमेकान्तदेशे तु, मंत्रस्यास्य स्वरूपकम् ॥ १७ ॥

भाषा—यह मंत्र असाधु पुरुषको नहि कहना, साधु पुरुषको एकांतप्रदेशमें इसमंत्रके स्वरूपको यत्नसे कहना.

मूल मंत्रोपि व्याख्येयो, महागुणविवर्धनः । येन विज्ञानमात्रेण, संपदः सर्वतो मुखा ॥ १८ ॥

भाषा—महागुणको विवर्धन करनेवाला मुलमंत्रका कथन करना जिसके विज्ञानमात्रसे सर्वतो मुखी संपदा प्राप्त होती है. मंत्रोद्धार " ॐ अर्हं असिआउसा नमः " यह नवपदका मूलमंत्र है.

त्रिभुवनस्वामिनीविद्या, त्रिभुवनस्वामितास्पदम् । विद्यांस्मरत हे धीराः, यद्यक्षयसुखेच्छवः ॥ १९ ॥

भाषा—त्रिभुवनस्वामिनी (मानुषोन्तरपर्वत उपर रहनेवाली सहस्त्रभुजाको धारणकरनेवाली सूरिमंत्रके दुसरे पीठकी अधिष्ठात्री है) देवी इसमंत्रकी अधिष्ठात्री है. इस विद्याका स्मरणकरनेवाला त्रिभुवनस्वामित्वको प्राप्त करता हुवा मोक्ष सुखको प्राप्त करता है.

लक्षैकस्यप्रजापेन, प्रसुनैः जातिसंभवैः । दशांशहोमतोयाति, सिद्धिं विद्या प्रसाधिता ॥ २० ॥

भाषा—चमेलीके ताजे फुलसे एक लक्ष जापकरके दशांश होम करनेसे विद्या सिद्ध होती है.

इति दशपूर्वधराचार्य श्री भद्रगुप्तविरचितायां श्री विद्यारत्नमहानिधौ
अनुभवसिद्धमंत्र द्वात्रिंशिकायां सर्वकर्मकर वर्णनोनाम प्रथमोधिकारः

अथातः संप्रवक्ष्यामि, वश्याकर्षणमुत्तमम् । येनविज्ञानमात्रेन, सुखंसंपद्यतेऽद्भुतम् ॥ १ ॥

भाषा—अवमें वश्य, आकर्षणकी उत्तमसिद्धिदायक विधिको कथन करुंगा जिसके विज्ञानमात्रसे अद्भुत सुखसंपदा प्राप्त होती है.

प्रणवं माययायुक्तं, कमला युतमेवच । कलिकुंडयुतं चापि, स्वामिनेवशमानय ॥ २ ॥
पुनरानय स्वाहेति, मंत्रपार्श्वजिनाग्रतः । त्रिरात्रंसाधितैः पुष्पै, रयुतेनवशंवदः ॥ ३ ॥

भाषा—प्रणव-ॐ, माया-ह्रीँ, कमला-श्रीँ, मंत्रोद्धारः—ॐ ह्रीँ श्रीँ-कलिकुंडस्वामिने वशं आनय आनयस्वाहा इसमंत्रको पार्श्वनाथप्रभुके आगे चमेलीके ताजेफुलोंसे १०००० तीनरात्रिमें साधन करनेसे हरकोईपुरुष वशमें होजाता है.

प्रणवं कामवीजंच, मायावीजं तथैवच । अधोरेफयुतंशून्यं, वाग्वीजेन प्रसंयुतम् ॥ ४ ॥

मायावाग्भव वीजेन, सहितामाययापुनः । शून्यं रेफेन संयुक्तं, सपासंसविसर्गकम् ॥ ५ ॥

भाषा—प्रणव-ॐ, कामवीज-क्लीँ, माया-ह्रीँ, अधोरेफयुतंशून्य-निचेकोरेफकेसाथशुन्य-ह यानि ह्र, वाग्वीजेन-ऐकारके, संयुतम्-साथ यानि ह्रैँ, माया-ह्रीँ, वाग्भववीजेन-ऐँ, माया-ह्रीँ शुन्य-ह, रेफेनसंयुक्त-रेफसहित, सपासंसविसर्गक-पासमेंविसर्ग (:) ह्रः मंत्रोद्धार—ॐ क्लीँ ह्रीँ ह्रैँ ह्रीँ ऐँ ह्रीँ ह्रः अपराजितायैनमः

श्रीअपराजितदेव्या, मंत्रोयमपराजितः । लक्षात्रितयजापेन, सिद्धिं याति सुनिश्चितम् ॥ ६ ॥

भाषा—श्री अपराजितदेवीका अपराजित मंत्र है, तीन लक्ष चमेलीके ताजे फुलोंसे जाप करनेसे निश्चय सिद्ध होता है

पिंडाकृष्टिं फलाकृष्टिं, द्रव्याकृष्टिं च कामितां । वस्त्राद्याकर्षणंसर्वं, कुरुते नात्र संशयः ॥ ७ ॥

भाषा—यहमंत्र पिंड आकर्षण, फलपुष्प आकर्षण, द्रव्य धनादि आकर्षण, कपडेका आकर्षण तथा इच्छित वस्तुका आकर्षण करताहै इसमें संदेह नहि.

वश्या भवन्ति कामिन्यो, भ्रश्यत्परिहितांबरा। आजन्मदास्यभावंच, भजन्ते नात्र संशयः ॥ ८ ॥

भाषा—रानी महारानी तथा कोईभी स्त्री कपडेके भानबगर वश होतीहै. तथा जन्मपर्यंत दास्यभावका निसंदेह स्वीकार करती है.

यद्यत्कामयतेसर्वं, तत्सद्य तस्य जायते। मंत्रराजप्रसादेन, फलमस्य न संशयः ॥ ९ ॥

भाषा—मंत्रवादी जिस जिस वस्तुकी कामना करताहै वह सर्ववस्तु उसको प्राप्त होतीहै. मंत्रराजकी कृपासे निसंदेह वात है.

प्रणवं पार्श्वनाथाय, मायावीजं तथैवच। एवं लक्षप्रजापेन, मंत्रोयं सिध्यति स्फुटम ॥ १० ॥

मंत्रोद्धारः—ॐ पार्श्वनाथाय ह्रीं, यहमंत्र एक लक्ष जापकरनेसे सिद्ध होताहै.

नारीनां पुरुषानांच, भुपतीनां विशेषतः। आराध्यमानः यत्नेन, दशाहेन वशंकरम् ॥ ११ ॥

सहस्रमेकं यत्नेन, दशाहं प्रतिवासरम्। पदभ्रष्टो जपेद्यस्क्त, ससद्यो लभतेपदम् ॥ १२ ॥

भाषा—ईस मंत्रकी यत्नपुर्वक आराधना करनेसे पुरुष या स्त्री तथा विशेष करके राजा वश होता है, प्रतिदिन एक हजार जाप दशदिन करनेसे पदभ्रष्ट हुवा हुवा पुरुष वही पदवीको प्राप्त होना है.

बांछितानिचजंतुनां, फलान्यस्यप्रभावतः। कल्पद्रोरिवजायन्ते, नाना रूपानि नित्यशः ॥ १३ ॥

भाषा—ईस मंत्रके प्रभावसे मनवंछितवस्तु प्राप्त होती है. यहमंत्र कल्पवृक्षके समान रोज नाना रूपका फल देता है.

पाशं पाशयुतं शुन्यं, विषन्नं मंगलं तथा । कल्याणं चेति मंत्रोयं, पार्श्वयक्षोभिधानतः ॥ १४ ॥

अर्थस्वयं विचार लेना.

देयोयं भक्तियुक्ताय, सुर्यचंद्रोपरागयोः । दीपोत्सवेथवा मंत्रो, रहस्सु गुरुपूजया ॥ १५ ॥

तेनापि भक्ति युक्तेन, शुद्धचित्तेन संततम् । मायामद्वियुक्तेन, क्रोधलोभमदोज्झिना ॥ १६ ॥

सत्यवाक्यप्रदानेन, गुरुपादोपसर्पिना । एकभक्तोषितेनैव, ब्रह्मचर्यविधायिना ॥ १७ ॥

भाषा—शुद्ध चित्तवाला, मायामद करके रहित, क्रोधलोभ अहंकार शुन्य, सत्यवादी, गुरुसेवामें तत्पर, ब्रम्हचारी, एकभुक्त याने एकाशन करनेवाला ऐसे भक्तियुक्त शिष्यको सुर्यग्रहण, चंद्रग्रहण, तथा दीपमालाके दिन एकान्तमें मंत्र देना, शिष्यने गुरुकी पुजा करनी चाहिये.

सहस्रैकस्यजापेन, षण्माषान्प्रतिवासरम् । श्रीमत्पार्श्वजिनेन्द्रस्य, गुरुपूजापुरस्सरम् ॥ १८ ॥

ध्यातव्यंसुधियानित्यं, मंत्रोयममरार्चितः । सिद्धिंयाति ततः तस्य, महासत्वशिरोमणेः ॥ १९ ॥

भाषा—बुद्धिमान पुरुषने ध्यानपुर्वक ६ मास पर्यंत प्रतिदिन एकहजार जाप करना, पार्श्वनाथ भगवानकी बडी पूजा पढानी चाहिये यह मंत्र देवोसें पुजित है. महासत्वशालिको मंत्रकी सिद्धि होती है.

यस्यायंसिध्यते मंत्रो, वश्ये तस्यवसुंधरा । सद्योभवति मंतस्य, कर्तव्यो नात्र संशयः ॥ २० ॥

भाषा—जिस पुरुषको यह मंत्र सिद्ध होता है पृथ्वी उसके वश होती है ईसमे संशय नहीं करना चाहिये.

द्वारेतस्यगर्जन्ति, शैला तुङ्गशरीरकाः । मुहुः स्त्रवन्मदासार–सिक्तोर्वीकामंतङ्गजाः ॥ २१ ॥

हेषन्तिच हयद्वारे, वेगनिर्जित वायवः । प्रणतिं याति पादान्तं, तस्यस्फारितभक्तिकम् ॥ २२ ॥

भाषा—जिसने पृथ्विको मदसे सिंचित कियाहै ऐसे पर्वत सदृश मदोन्मत्त हस्ति उसके द्वारपरगर्जना करतेहै, उसके दरवाजेमें अपनेवेगसे वायुको जितनेवाले घोडे गरजतेहै, जिनका भक्तिभाव विशेष स्फुरायमान हुयाहै ऐसे शत्रु मन्त्रवादीके पगमें नमस्कार करतें हैं.

पादपीठलूठन्मूर्ध–मुकुटकोटितटोत्कटा । पादयोः तस्य भुपालाः, लुठन्ति बहुमानिनः ॥ २३ ॥

भाषा—मंत्रवादीके पगमें करोडो मानी राजाओंके मुकुट लोटती है, यानि मानिराजाभी नमस्कार करतेहै.

नदोषान् कोपि गृण्हाति, गुणान् सर्वोपि भाषते । तस्य सौभाग्ययुक्तस्य, यस्य तुष्टो जिनेश्वरः ॥ २४ ॥

भाषा—उस सौभाग्यशाळी मंत्रवादीके दोषोंको कोई ग्रहण नही करता परंतु उसके गुणोंका सब कोई कथन करतेहै, जिसके उपर भगवानकी कृपाहो उसका कहनाही क्या ?

ब्रह्मात्रिलोक कमला, मूलवीजं त्रयंततः, कलिकुण्डदण्डायर्ँह्वी, नमो मंत्राक्षराणिच ॥ २५ ॥

भाषा—ब्रह्म-ॐ त्रिलोक-र्ँह्वी कमला-श्रीं मंत्रोद्धारः—ॐ र्ँह्वी श्रीं कलिकुंडदंडाय र्ँह्वी नमः

रविसंख्यसहस्राणि, प्रसूनैर्जातिसम्भवैः । पयपुर्णालुकामध्ये, जापं कुर्याज्जिनाग्रतः ॥ २६ ॥

सिद्धिं याति ततो मंत्रः, पार्श्वस्यैवप्रभावतः । कामदोमोक्षदश्चैव, भक्तिभाजां शरीरिणाम ॥ २७ ॥

भाषा—सुवर्णके कटोरेमें दुध भरकर उसमें भगवानकी मूर्ति सन्मुख स्थापन करके चमेलीके ताजे फुलोंसे बारा हजार जाप करना जिससे भक्तजनोंको पार्श्वनाथ प्रभुकी कृपासे कामको और मोक्षको देनेवाले ईस महामंत्रकी सिद्धि होतीहै.

रक्षो यक्षोरगत्याघ्र—व्यालानलगरादयः । नापकर्तुमलं तेभ्यो, येचास्यशरणंगताः ॥ २८ ॥

भाषा—जो पुरुष इसमंत्रके शरणमें जाताहै उसका राक्षस, यक्ष, सर्प, वाघ, हाथि, अग्नि, जहर आदि कुछ बिगाड नहीं सकता.

वन्हिव्याधिपयोनिधि, हरिकरिफणिचौरसंयुगादीनाम् । भयमखिलमस्यसंस्मृति, मात्रादपि देहिनांव्रजति॥२९॥

भाषा—मंत्रवादीको ईसमंत्रके स्मरणमात्रसे अग्नि, व्याधि, समुद्र, सिंह, हाथि, सर्प, चोर आदिका भय नाश होताहै.

व्यन्तरविषविषमज्वर—दुष्टग्रहशाकिनीप्रमुखदोषाः । दुरे तस्य वहन्ते, यस्यायं भवति हृदयस्थः ॥ ३० ॥

भाषा—यहमंत्र जिसके कंठस्थ है उसके पास व्यंन्तर-विष-विषमज्वर-दुष्टग्रह-शाकिनी-प्रमुख-दोष नहि आते, दुरसेही भाग जाते है.

सद्योदासतिकर्षित—करालकरवालकर्षितः शत्रुः। श्रीपार्श्वमंत्रमुच्चै, रुच्चरतां देहिनां नित्यम् ॥ ३१ ॥

भाषा—श्रीपार्श्वनाथ भगवानके इस मंत्रका उच्चारण जो करता है उसके सन्मुख करालतरवारनिकाल शत्रु खडा होजावे तो वहभी दासके सदृश होजाता है.

निन्दुविरूपवंध्या, शल्यवती दुर्भगादि दोषत्वम्। भजते न जातुजिनवर—वरमंत्रपरायणो जन्तुः ॥३२॥

भाषा—ईसमंत्रको पाठ करनेवाली स्त्रीको निन्दु (बच्चा पैदा होनेकेबाद मरजाना) खराब शकल, वांझ, शल्यवाली, दुर्भगादि दोष नही सताते है.

कीर्ति कमलारमणी, राज्यंसौभाग्यमाशुसौख्यानि। मंत्रेलब्धेप्यास्मिन्निह, जन्तोसपदिजायन्ते॥ ३३ ॥

भाषा-इस मंत्रके प्राप्त होनेपर मनुष्यको कीर्ति, लक्ष्मी, सुंदर स्त्री, राज्य, सौभाग्य, सौख्य, यह सर्वकी प्राप्ति होती है

तममररमणीनिकरः, सरभसमभिसरतिदिव्यविश्रान्तम्। लावण्यसिन्धुगाहन—गिरिराजे यस्य चेतसो वृत्तिः॥३४॥

भाषा—लावण्यसमुद्र अवगाहन करनेमे मेरुपर्वत सदृश मंत्रराज जिसके चित्तमें जमाहै उसे देवांगनाभी अभिसरण करतीहै. देदीप्यमान विश्रांतस्थान होजाती है.

येषां परमब्रह्माणि, मंत्रेस्मिन्परममानसीप्रीतिः । तेहन्तसाभिलाषं, वीक्ष्यते मुक्तिकामिन्या ॥ ३५ ॥

भाषा—जिसका मन परमब्रह्मरुप मंत्रराजमें उत्कृष्ट मानसी प्रीति रखताहै उसको मुक्ति स्त्री इच्छापुर्वक देखती है.

वाग्भवं कामवीजंच, सान्तं षान्तेन सयुतम् । ऐँकारेणयुतं चापि, मंत्रं वश्यकरं परम् ॥ ३६ ॥

भाषा—वाग्भव–ऐँ काम–क्लीँ सान्त–ह षान्तेन–स ऐँकारेणयुतं ऐँकारसहित (ह+स+ऐँ–ह्सैँ)

मंत्रोद्धारः—ऐँ क्ली ह्सैँ नमः यहमंत्र परमवशिकरण है.

उर्धाधो रेफ संयुक्तं षष्टमस्वरभुषितम । नादविन्दुकलाक्रान्तं, साध्यनामैकगर्भितम् ॥ ३७ ॥

तद्वाह्येष्टदलंपद्म, कर्णिकाकोटिभूषितम् । तत्र चौंपार्श्वनाथाय, स्वाहेति पदमुल्लिखेत् ॥ ३८ ॥

स्वराः षोडसतद्वाह्ये, हरहर ततोवहिः । कादिक्षान्तपदैपश्चा, पुरयेत्सततंवहिः ॥ ३९ ॥

मायावीजेन तद्वाह्ये, रेखात्रित्रय वेष्टितम् । भुर्य पत्रे लिखेच्चक्रं, सर्वसंपत्तिकारणम् ॥ ४० ॥

कर्पुरागरु कस्तूरी, कुकुमादिसुगंधिभिः । विलेख्यं जाति लेखिन्या । शुभलग्ने शुभेदिने ॥ ४१ ॥

वेष्टयं कुमारीसूत्रेण, वाहौवद्धं च देहिनाम । सौभाग्यभाग्यमुख्यानि, सौख्यानि कुरुते क्षणात् ॥ ४२ ॥

भाषा—उपरनीचे रेफ लगाकर हकारको छट्टास्वर ऊकार लगाना नादबिन्दु कलाक्रांत करके साध्यनाममध्यमे देकर उसकेबाहर कमलके आठ पत्र करना उसमें ॐपार्श्वनाथायस्वाहा लिखना उसके बाहर कमलके सोलहपत्र करके उसमें १६ सोलहस्वर भरें उसके बाहर हरहर ऐसा शब्द भरें उसके बाहरके वलयमें कसे लेकर क्षपर्यंतके अक्षर भरें फीर मायावीज–ऱ्हीं कारसे तीन रेखा वेष्टित करके रेखांतमें क्रौंकार देकर चक्र बनावें यह चक्र भुर्यपत्रमें अष्टगंधसे चमेलीके कलमसे शुभदिन तथा शुभनक्षत्रमें लिखें फीर कुमारी कन्याके हातसे काते हुये सुतसे हाथमे बाधना. यह चक्र सर्व संपत्तिकारक, तथा सौभाग्य ओर अनेक प्रकारके सुखोंका दाता है.

प्रणवं माययोपेतं, कमलाकृतसन्निधिम् । मायायुक्तं पुनर्नाम, गर्भितं कमलोदरे ॥ ४३ ॥

बहिरष्टदलाक्रान्तं, मायावीजंसमन्वितम् । बहिप्रणवऱ्हींकार–पार्श्वनाथाय ऱ्हीं नमः ॥ ४४ ॥

लिखित्वापूजयेद्भूर्ये, सुगंधद्रव्ययोगतः । कन्यासूत्रेणसंवेष्ट्य, धारणीयंकरादिषु ॥ ४५ ॥

भूतादिदोषविद्रावं, योषितां गर्भसंभवम् । सौभाग्यादि गुणाश्चैवं, यंत्रमेतत्करोत्यहो ॥ ४६ ॥

भाषा—कमलकेमध्यभागमें प्रणव–ॐ, माया-ऱ्हीँ, कमला-श्रीँ, माया-ऱ्हीँ ये अक्षरलिखें (ॐ ऱ्हीँ श्रीँ ऱ्हीँ)ऱ्हीँ कारके उदरमें नामलिखकर। बाहर अष्टकमलदलमें मायाबीज–ऱ्हीँ अक्षररखें प्रत्येक पान पत्रमें कमलपत्रमें मायाबीज लिखें फिर उसके बाहर ॐ ऱ्हीं पार्श्वनाथाय–ऱ्हीँ नमः यह मंत्रलिखे. यहमंत्र भोजपत्रपर अष्टगंधसे चमेलीके कलमसे

लिखकर कुमारीकन्याके हातके कातेहुये सुतसे हस्तमे बांधेतो भुतादि दोष नाश होता है. स्त्रीको संतान पैदा होवे तथा सौभाग्यादि गुण संपदा लक्ष्मी प्राप्त होवे.

प्रणवं परमंतत्वं, मायाबीज विराजितम् । परमेष्ठ्यादि पदंचैव, र्‍हींकारंच नमः पदम् ॥ ४७ ॥

त्रिसंध्यं विजने भूत्वा, जातिपुष्पैरथोत्तमैः । अष्टोत्तरं शतंजाप्य,–मस्या सर्वार्थसिद्धये ॥ ४८ ॥

भाषा—मंत्रोद्धारः—ॐ र्‍हीँ आसिआउसा र्‍हीँ नमः सर्व कार्यकी सिद्धिके लिये ईस मंत्रको एकांतमें चमेलीके ताजे फुलोंसे त्रिकाल १०८ जापकरें सिद्धि होती है.

इत्याकृष्टिंचवश्यादौ, मंत्राष्टकमुदीरितम् । श्रुताम्भोधिमवगाह्य, रत्नोच्चयमिवोज्वलम् ॥ ४९ ॥

भाषा—श्रुतांभोनिधिकी अवगाहना करके रत्नोके सदृश इस आकर्षण वश्यादि मंत्राष्टकका कथन कियाहै.

इति दशपूर्वधराचार्य श्री भद्रगुप्तविरचितायां श्री विद्यारत्नमहानिधौ अनुभवसिद्धमंत्र द्वात्रिंशिकायां वश्याकर्षणादिकर्मकरमंत्राष्टकवणनोनामद्वितीयोऽधिकारः

अथातः संप्रवक्ष्यामि, स्तंम्भस्तोभादिकंविधिम् । येनविज्ञानमात्रेण, जगतोऽजय्यता भवेत् ॥ १ ॥

भाषा—अबमें स्तंभ स्तोभादिकाविधि कथन करुंगा जिसके विज्ञानमात्रसे जगतमें मनुष्य अजय्य होता है.

उर्धाधोरेफयुक्तस्य, कलाविन्दु युतस्यच । नामसंगर्भितस्याथो, शून्यवर्णस्यसंलिखेत् ॥ २ ॥

परमेष्टिपंचबाह्ये, सम्यग्ज्ञानंचदर्शनम् । चारित्रं च ततः स्वाहा, ॐपूर्वक ततः स्वरान् ॥ ३ ॥

वर्गाष्टकं च पत्रेसु, संधौतत्वाक्षरानिच । मायाद्यमंकुशेरुद्धं, रेखात्रितयवेष्टितम् ॥ ४ ॥

भूमण्डल ततः कृत्वा, यथाविधिसमन्वितम् । पट्टेपटेथ भूर्जेवा, द्रव्यैश्चगुलीकादिभिः ॥ ५ ॥

शराशक्रादिदेवाना, मपिस्तभनमुत्तमम् । भाराक्रांन्तमिदं चक्रं, कुरुते नात्र संशयः ॥ ६ ॥

एतदेव पटे भूर्जे, कर्परे मृतकर्पटे । विलिख्यनिखनेत्प्रेत,—वने संपुटमध्यगम् ॥ ७ ॥

तिल तुषराजी लवणं, मिश्रीकृत्यैकविंशति दिनानि । अष्टशतमुमयकालं, जप्तं मंत्रेणसिद्धसत्केन ॥ ८ ॥

उच्चाटनविद्वेषनमारण,—गुरुमोहमुख्यकर्माणि । मनइप्सितानि जनानां, जायंते सद्गुरुप्रसादतः ॥ ९ ॥

भाषा—शुन्यवर्णहकारको निचेऊपर रेफलगाकार कलाबिन्दु (ँ) युक्त करनेसे (र्ह्रँ) अक्षर होताहै इसके बीचमें नाम लिखना पिछे ॐकारपुर्वक पंच परमेष्टिपद सम्यक्ज्ञान, दर्शन, चरित्र, तप, सहीत अंतमे स्वाहालगाकर लिखे

बाद षोडष स्वरलिखें पिछे अष्टवर्ग लिखे संधिमें तत्वाक्षर ह्रीँ लिखे यंत्रको ह्रीँ कारवेष्टित करे रेखाके अंतमे क्रौँ कारलिखे पृथ्वी मंडलकरके लकडीके पट्टेमे, कपडेमें अगर भूर्ज पत्रमे अष्टगंधसे लिखे इससे शक्रेंद्रआदिका स्तंभन होता है. ईसी यंत्रको भोजपत्रमें, कपडेमें, कर्परमें मृतकके घडेके ठिकरेमें तथा मृतमनुष्यके कपडेमें लिखकर स्मशान भुमिमें संपुटकर गाडदेवे २१ दिनतक सवरे तथा संध्याको तिल, तुष, राई और लवण मिलाकर १०८ वार जापकरें सिद्ध होता है मंत्रसे उच्चाटन, विद्वेषण, मारण, मोहन तथा मनो वांछित कार्य सद्गुरुकी कृपासे सिद्ध होते है.

ॐउल्कामुख्यलताक्षी, विद्युजिह्वे महावले । अमुकस्य ज्वरं सद्यः, आनयानयरौद्रके ॥ १० ॥

द्विर्दहः द्विःपचोंचार्य, स्वाहान्ते च ततः क्षिपेत् । एकं भक्तं ततःकृत्वा, सिध्द्येऽष्ट शतं जपेत् ॥ ११ ॥

कृष्णाष्टम्यां चतुदश्यां, चिताङ्गारसुपाददेत् । खरीमुत्रेण संक्वथ्या, रलुकद्रुमसंपुटे ॥ १२ ॥

विलिख्येदं महामंत्र,-मेकान्ते संपुटेक्षिपेत् । अष्टोत्तरशतं चास्य, प्रजपेत्प्रतिवासरम् ॥ १३ ॥

यन्नामलिखितंगर्भे, जप्तंचोघमपूर्वकम् । तस्यानये ज्वरं सद्य, सप्तास्यमपितत्क्षणात् ॥ १४ ॥

न तत् शक्रोपिसंहर्तुं, शक्नोतिज्वरमुर्छितम् । तदाक्षराली नो यावत्, क्षालिता पयसाकिल ॥ १५ ॥

भाषा–मंत्रोद्धारः—ॐ उल्कामुखी अलताक्षी विद्युज्जीह्वे महाबले रौद्रे अमुकस्य ज्वरं सद्य आनय आनय दहदह

पचपच स्वाहा. कृष्णचतुर्दशी अगर कृष्णाष्टमीके रोज एकासन करके धुपदीप पुरस्सर १०८ वार जपनेसे सिद्धि होती है.

प्रयोगः—काली चौदश या अष्टमीके दिन स्मशानमें जाकर चिताके बीचका कोयला लाना फिर उस कोयलेको गधीके मुत्रमें पथ्थरपर घसकर अलुककी लकडीके पट्टीमें उपरका मंत्र नामके साथलिखे, पीछे उसका (उसपट्टीका) संपुटकरके काले डोरेसे लपेटकरके एकान्तमे रखे (अथवा उसपट्टीको काले डोरेसे लपेटनेके बाद उस लकडीको मट्टी लगाकर गोला बनावे फिर बहेडाकी लकडीकी अग्निकरके उस गोलेको तपावे. आऊलपुष्पसे १०८ जाप रोज करे इतिद्वितिय पुस्तके) काले फुलसे रोज जाप करे. जिसका नाम अंदर लिखाहै उसको उद्यमपूर्वक लक्ष्यमें लेकर जाप करेतो उसको सात दिनके अंदर ज्वरकी बाधा होतीहै. उस ज्वर मुर्च्छितको शक्रेन्द्रभी रोगरहित नही करसकता ओर जबतक मंत्राक्षरको दुधसे न धोया जावे तबतक ज्वर नहि उतरता.

ॐ अमृतोद्भवे देवि, वर्षयवर्षयामृतम् । इत्यादिकेन मंत्रेण, वन्हिः स्तोभोविधीयताम् ॥ १६ ॥

भाषा—मंत्रोद्धारः— ॐ देवि अमृतोद्भवे अमृतं वर्षय वर्षय स्वाहा अग्निस्तंभनका मंत्रहै.

ॐकारं मध्यसंस्थानं, मायाबीजेन वेष्टितम् । अमुकं देवी कुरुकुल्ले, कुरु स्वाहेतिवोच्चरेत् ॥ १७ ॥

षट्कोणं यंत्रमालिख्य, मुलमंत्रेणगर्भितम् । अष्टोत्तरशतं जप्त्वा, ततःकर्मसमाचरेत् ॥ १८ ॥

भाषा—ॐकारको ह्रीँ कारके मध्यमें लिखके षटकोणके छै कोनमें कुरुकुल्ले स्वाहा यह मुलमंत्र लिखे. पीछें ॐ ह्रीँ

देवी कुरुकुल्ले अमुकं कुरु स्वाहा इसमंत्रका १०८ वार जाप करे तो मंत्र सिद्ध होताहै. इसमंत्रको अच्छा दिन देखकर चंद्रबल आदिका निर्णय करके साधन करे. धुपदीप फलपुष्पनैवेद्य आदि अष्टप्रकारी पुजाका सामान सामग्रीमें समझना चाहिये.

दुष्टं कुष्टं क्षयं याति, क्षारनीरं पयायते । पुष्प मालायते व्याल, कुन्ताग्र कुसुमायते ॥ १९ ॥
नीर पुरायते वन्हिः, गरलंच सुधायते । माघमासायते ग्रीष्मो, रविःशीतकरायते ॥ २० ॥
नित्यैक द्वित्रिसंभुत, ज्वरो याति परिक्षयं । कंपस्वेदादिकादोषा, गच्छन्ति प्रलयं क्षणात् ॥ २१ ॥
आज्ञा मात्रेणच क्षुद्रा, वृश्चिकाद्याः तनुभुताः । दूरे व्रजन्ति विद्याया, एतस्या सुप्रभावतः ॥ २२ ॥

भाषा—इसमंत्रके प्रभावसे दुष्ट कोडकी व्याधि नाश होती है, खारा पानी मिठा होता है, सर्प फुलकी माला सहश आचरण करता है, भालेका अग्रभाग फुल सहश होता है, सुर्य, चंद्रमाके सहश होता है, रोजका, दोदिनका, तीनदिनका कंप खेदआदिका ज्वर नाश होताहै, क्षुद्रवृश्चिकादि जंतु हुकमसे दुर भाग जातेहै.

ॐउच्छिष्टपिशाचिनीदेवी, महीस्वाहेतिकथ्यते । उच्छिष्ट पिशाचिनी नाम, विद्यासर्वज्ञभाषिता ॥ २३ ॥

भाषा—मंत्रोद्धारः ॐ उच्छिष्ट पिशाचिनी देवीमहीस्वाहा. सर्वज्ञ भगवानने उच्छिष्ट पिशाचिनी विद्याकथन कियाहै.

मृन्मयीपुत्रीकां कृत्वा, जरतुझंखरसूर्पकम् । एकान्ते स्थापयेत्तां च, पूजयेत् च यथाविधिः ॥ २४ ॥

त्रयोदश दिनान्युच्चैः, पुजानैवेद्यपूर्वकम् । उच्छिष्टोच्छिष्टवेलायां, जपेद्वारान् त्रयोदशः ॥ २५ ॥
डुंबिकायैप्रदातव्यं, नैवेद्यं प्रतिवासरम् । चतुर्दशेन्हि संप्राप्ते, मध्येकृष्णघटं क्षिपेत् ॥ २६ ॥
रक्तपुष्पैश्चसंपुज्य, पुत्रिकां तां च मृन्मयीं । यावता तैलपुरेण, क्रडेत्रावत्प्रमाणकम् ॥ २७ ॥
कूपे सरसि न द्यांवा, प्रवाहयेत्ततो घटम् । सिद्धत्येषाततोविद्या, महासत्वैकशालिनाम् ॥ २८ ॥

भाषा—मट्टीकी पुतली बनाकर टुटे सुपडेमें एकांतस्थानमें रखे, वहांपर धुपदीप नैवेद्य पुष्पपुर्वक यथाविधि पूजा करे. तथा वहां उपरके मंत्रके १३००० पाठकरे. १३ दिनमें हररोज पाठ तथा पुजा करे तथा १३ दिनतक उच्छिष्ट वेलामें १३ वार मंत्र हरसमय पढे. प्रतिदिनका चढाया हुवा नैवेद्य डुमनीको देना बाद १४ वे रोज मट्टीकी पुतलिकी लाल कणेरके फुलोंसे पुजा करके काले रंगके घडेमे रखे ओर उपरसे तेल सरिसवका डाले. तेल इतना डाले कि तेलमें पुतली डुबजाय पीछे उसघडेको कुप, तलाव या नदीके पानिमें बहादेवे ऐसा करनेसे महासत्वशाली जीवको यह विद्या सिद्ध होतीहै.

यद्येकदापि पुरुषाणां, साधयतां स्वलितभवेत । षण्माषान्ते ततोविद्यां, पुनरेतां प्रजापयेत् ॥ २९ ॥
सिद्धासती च जन्तूनां, ददाति प्रतिवासरम् । द्रम्मान त्रयोदशेवैतान्, पुनरन्यस्यनोवदेत ॥ ३० ॥

भाषा—जोकभी मंत्र साधते वखत (१४ दिवसमें) स्वप्नदोष होजायतो फीर छै महिनेके अंतमे इसविद्याका साधन करे, यह विद्या सिद्ध होनेपर प्रतिदिन १३ द्रम्म (रुपिया) देतीहै, यह बात किसीको कहना नही. कहनेसे तो रुपिया मिलना बंद होजाताहै.

परमागमसंप्रोक्तं, विश्वकंपैकचेटकम् । द्रम्माष्टकं प्रदं सद्यः, साधयेत् धैर्यसंयुतः ॥ ३१ ॥

ॐचल चल प्रचलप्रचल, विश्वकंपावयचवेला--त्रयंच ठःठःठः स्वाहा, विश्वकंपकंपेतिच ॥ ३२ ॥

श्रीपर्णीपट्टकेमंत्रं, लिखित्वैनं महामतिः । जातिपुष्पैः ततो जाप्यं, पंचायुतप्रमाणकम् ॥ ३३ ॥

तद्दशांशेन होतव्यं, त्रिमधुरेण संयुतम् । बद्रमानगुटीभिः, महिसाख्यस्यचद्रुतम् ॥ ३४ ॥

कृष्णांष्टम्यां निशामध्ये, नवम्यां भास्करोदये । अष्टोत्तरशतंरक्त, पुष्पाणि प्रजपेत्ततः ॥ ३५ ॥

चेटकप्रतिमां कृत्वा, चितांगारेण मंडले । हृदये साध्य नामंच, लिखित्वाप्रजपेत्ततः ॥ ३६ ॥

निधूमांगारसपूर्णं, घटमाधाय होमयेत् । तान्येव पूर्व जप्तानि, रक्तपुष्याणि शक्तिमान् ॥ ३७ ॥

विद्वेषोच्चाटनंसद्यः कुरुतेदेहिनामयम् । कपिलाक्षचेटको ह्येवं, जप्तपठितसिद्धिदः ॥ ३८ ॥

भाषा—विश्वकंप चेटकका मंत्र आगमके अंदर रुपिया ८, देनेवाला है धैर्यवान साधन करे मंत्रोद्धारः— ॐ चलचल

प्रचलप्रचल विश्वंकंप विश्वंकंप विश्वकंपावय ठः ठः ठः स्वाहा श्रीपर्णीके पट्टीपर मंत्र लिखकर बुद्धिमान ताजे चमेलीके फुलोंसे ५०००० जाप करे त्रिमधुर [मध दुध घृत] से भैसागुग्गुलकी गोली ५००० हजारसे आहुति देवे सिद्ध होताहै. काली अष्टमीकी रात्रिको नवमी सवेरको १०८ लालकणेरसे मंत्र जपे चेटकप्रतिमा [मट्टिकी] बनावे उसके हृदयमें चितांगारसे शत्रुका नाम लिखे फिर उसके आगे जाप करे निर्धुमांगारसे भरे घडेमें होमकरे और लाल कणेरके फुलकी आहुति देवे विद्वेषन उच्चाटन सबकार्य करताहै. उसीतरह कपिलाक्ष चेटकपठित सिद्धका पाठ समझना. ज्यादा पाठकस्वयं विचारले.

ॐ नमो भगवत्यादौ, शिवचक्रे च मालिनी। स्वाहापदं ततो देयं, मंत्रोयं लाभदो मतः ॥ ३९ ॥

भाषा—मंत्रोद्धारः— ॐ नमो भगवती शिवचक्रे मालिनी स्वाहा. यहमंत्र लाभदेनेवाला है.

श्वेतार्कस्यचमूलेन, बिम्बंपार्श्वजिनेशितुः । विधायच प्रतिष्ठाप्य, मंत्रेणानेनपूजयेत् ॥ ४० ॥

यद्यद्विचिंत्यते कार्यं, मनुजैरिह लौकिकम् । तत्तत्संपद्यते सद्यो, मंत्रस्यास्य प्रभावतः ॥ ४१ ॥

राजद्वारे व्यवहारे, विवादे धान्यसंग्रहे । इत्येवमादिकार्येषु, सर्वेष्वेनं विचिन्तयेत् ॥ ४२ ॥

भाषा—पुष्यनक्षत्र सप्तमी शनिवार, 'सप्तमी रविपुत्रेण, पुष्यनक्षत्रेनयुतं, या पुष्यनक्षत्र रविवार आदिमें पहले निमंत्रन देकर पूजा कर दुसरे दिन सवेरे अपनी छायाबचाकर गुरु देवका नाम लेकर सफेद अर्कको जडलाकर उसकी

पार्श्वनाथ भगवानप्रभुकी मूर्ती बनावे, उपरके मंत्रसे प्रतिष्ठा करावे तथा उसीमंत्रसे पुजा करे पिछे जाप करे. मंत्र सिद्ध होवे. इस मंत्रकी कृपासे मनुष्य इसलोकसंबंधि कार्यका जो जो विचार करे वे सबकार्य सिद्ध होते है. तथा राजदरबारमें, व्यवहारमें, वादविवादमें, धान्यसंग्रह करनमें इत्यादि कार्योमें इसमंत्रका चिन्तन करनसे विजय प्राप्त होताहै.

इति दशपूर्वधराचार्य श्री भद्रगुप्तविरचितायां श्री विद्यारत्नमहानिधौ अनुभवसिद्धमंत्र द्वात्रिंशिकायां स्तंभस्तोभादिकर्मकरमंत्राष्टकवर्णनोनामतृतीयोऽधिकारः

अथात संप्रवक्ष्यामि, शुभाशुभादिसूचकम् । मंत्राष्टकमिदंरम्यं, सद्यप्रत्ययकारकम् ॥ १ ॥

भाषा—अबमें, शीघ्रफल देनेवाला तथा स्वानुभूत शुभाशुभ सूचक यानि स्वप्नविद्या, कर्णमें भुतभविष्य वर्तमान, जाननेकी विद्या, क्षुद्रजन्तुशमनविद्या इत्यादि विद्याओंका वर्णन करुंगा.

प्रणवं मायया युक्तं, लाह्वापलक्ष्मीकान्वितम् । वायु शुन्यावसानंच, मंत्रमत्रविदो विदुः ॥ २ ॥

सहस्रदशकं जाती-पुष्पैः पुर्वं प्रजप्यतु । पश्चाद्दशांशहोमेन । सिद्धिरस्याविधीयते ॥ ३ ॥

कार्यकालेच संप्राप्ते, विधायैकाशनंतपः । अष्टोत्तरशतं जप्त्वा, स्वपेद्भूमौ व्रतास्थितः ॥ ४ ॥

लाभालाभं भविष्यन्तम्, शुभाशुभं जयाजयम् । जीवितं मरणं चैव, सुभिक्षं क्षेममेव च ॥ ५ ॥
वर्षावर्षं भयं भीति--वर्जितं सुखदासुखम् । लगित्वा कर्णयो र्देवि, सर्वमाख्याति निश्चितम् ॥ ६ ॥

भाषा—मंत्रवादी कहतेहै. प्रणव-ॐ, माया-ह्रीँ, लाह्वापलक्ष्मीके साथ, वायुवीज-स्वा. शुन्य-हा मंत्रोद्धार ॐ ह्रीँ लाह्वापलक्ष्मीस्वाहा इसमंत्रको चमेलीके ताजे फुलोंसे १०००० दशहजार जाप १।३।५ ऐसे दिनोमें करे फिर दशांश आहुति देनेसे मंत्रसिद्ध होताहै. कार्यकाले दुधचावलसे एकासन करके १०८ जापकरके मौन होकर जमीनपर शयनकरे, तो लाभालाभ, भुतभविष्य, वर्तमान, शुभाशुभ, जीवित मरण, सुभिक्ष दुर्भिक्ष, वर्षावर्ष, अभय, भिति, सुखदुःख इत्यादि सर्व देवी कर्णमे निसंदेह कह देतीहै.

ॐ ह्रीँ लाह्वापलक्ष्मीच, ह्वीँ क्ष्वीँ च कुश्चहंसच । स्वाहाकारं ततोदेयं, मंत्रोयं मुनिभाषितः ॥ ७ ॥
त्रयोदश सहस्राणि, जातिपूष्पैश्च पुर्वतः । जापोस्य हि विधातव्यः, महासत्वैकशालिभिः ॥ ८ ॥
तदनुत्तरसेवायां, दशांशे होमतस्तथा । मंत्रोयं साध्यतांनेयः, संयमारामगामिभिः ॥ ९ ॥
विधिः पुनरयंचात्र, मंत्रस्यास्य प्रसाधने । स्नात्वा विलिप्यसर्वांगं, सदशश्वेतवस्त्रभृत ॥ १० ॥
स्वयंचोपोषितोभूत्वा, कन्याभोजनदायकः । कुमारीगुरुपूज्यानां, वस्त्रदान पुरस्सरम् ॥ ११ ॥

श्रीमदम्बालिकादेव्या-बिम्ब माधायसद्भुवि । स्नानपूजादीकं कृत्वा, तस्याएव पुरः स्थितः ॥ १२ ॥

विद्यामेतां महाभक्त्या । संयताक्षोमहामतिः । दिनत्रयेन संसाध्यः, केवलीव भवेन्नरः ॥ १३ ॥

भाषा—मंत्रोद्धार ॐ ह्रीँ लाह्यपलक्ष्मी क्ष्वीँ क्ष्वीँ कुहंसस्वाहा, यहमंत्र मुनि भाषितहै. इसमंत्रको महासत्वशाली संयम आरामगामि साधुपुरुषने साधना, स्नान करके केशरचंदनका शरीरमें लेपकरके किनारीवाला सफेद रेशमी कपडा पहनके अठ्ठमकरके कुमारी कन्याको जिमाकर तथा गुरुमहाराज व कुमारी कन्याको वस्त्रदान देकर पिछे श्रीमद् अंबिका देविकी मुर्ती शुभ स्थानमें स्थापनकरे उनका प्रक्षाल पुजा आदिकरके महाभक्तिपूर्वक पांचोइंद्रियोका दमन करताहुवा ३ तिनदीनमें १३००० चमेलीके ताजे फुलोंसे जापकरे उत्तरसेवामें दशांश आहुति देवे मंत्र सिद्ध होवे, साधनकर्ता केवलीसदृश होताहै. भुतभविष्य वर्तमानकहनेमें.

यत्परैश्चिन्तितं कार्यं, स्वयं वा चिन्तितं भवेत । नष्टंवा निहितं चापि, तथाज्ञानस्य नामकम् ॥ १४ ॥

अतीतं वर्तमानं वा, भविष्यं वा यदर्थयेत् । ज्ञातुं मत्री तकं सर्वं, कथयत्येषा कर्णयोः ॥ १५ ॥

भाषा—दुसरेने या अपने आपने चिंतित कियाहुवा कार्य, नाश होगया कार्य, गुप्तरखीहुई वस्तु, तथा भुत भविष्य वर्तमान समयकी हकीकत इत्यादि कोइभी जाननेकी इच्छा मांत्रीककी होवेतो उसके कर्णमें देवी बैठे बैठे सर्व हकीकत कहदेतीहै.

ॐ ऱ्हीँ लाहापलक्ष्मीच, हंसस्वाहा च विन्यसेत्। विश्वोपकारिर्णोविद्या-मेतां तत्वविदोविदुः ॥ १६ ॥

सहस्त्रं दशकं जाती, पुष्पैः पूर्वं प्रजप्यते। हूयते तु दशांशेन, पश्चाद्विद्या प्रसिध्यति ॥ १७ ॥

भाषा-मंत्रोद्धार ॐ ऱ्हीँ लाहापलक्ष्मीहंसस्वाहा. ताजे चमेलीके फुलोंसे १०००० जाप करके दशांश आहुति करे तो यहविद्या सिद्ध होतीहै जिसे मंत्रवादी विश्वोपकारिणी महाविद्या कहतेहै.

आज्ञामात्रेण संसिद्धा, करोत्येषा शरीरिणाम्। जङ्गमे स्थावरे वापि, विषेवीर्यविनाशनम् ॥ १८ ॥

भाषा—विद्यासिद्ध होनेपर आज्ञामात्रसे देहधारीका जंगमस्थावर विष नष्ट करताहै.

एतद्विद्यात्रयं भव्य, जीवोपकृतिहेतवे। मयागममहाम्भोधि-मध्यादुधृत्यदर्शितम् ॥ १९ ॥

मिथ्यादृशांनदातव्यं, दातव्यं सुदृशांपुनः। दातव्यं योग्य जीवाना-मयोग्यान न दापयेत् ॥ २० ॥

भाषा—यह तीन विद्याओंको भव्याजिवोंके उपकारके लिये आगम समुद्रका मंथन करके उद्धार कियाहै. यहविद्या मिथ्या दृष्टिको न देना सम्यक् दृष्टि योग्यपुरुषको देना चाहिये.

षान्त ककार संयुक्तं, लकारं सान्त संयुक्तम्। रेफस्वर कलाक्रांन्तं, विन्दुपेतं महाक्षरम् ॥ २१ ॥

भाषा-षान्त-स, क कारकेसाथ, लकार-ल, सान्त-ह, लकारहकारके सहितमीलाना, रेफस्वर, कलाक्रांत करके बिन्दुदेना (ऱ्क्ष्ल्ह्रीँ) ऐसा अक्षर बनें इसे महाक्षर कहतेहै.

इदमेवाक्षरलक्ष—वारं रक्त प्रसुनकैः । जप्तं करोति जन्तूनां, वश्याकृष्टिमहोदयम् ॥ २२ ॥

भाषा—रक्त कणेरके फुलोंसे एक लक्ष जाप करे तो महावश्याकर्षणको करताहै जिससे महोदय होताहै.

इद्रंमेवा क्षरं लक्ष—वारं जाती प्रसूनकै । जाड्यं हरति जन्तूनां, जप्तं सद्‌ज्ञान मुद्रया ॥ २३ ॥

भाषा—चमेलीके फुलोंसे एकलक्ष ज्ञानमुद्रासे जाप करेतो अज्ञानताका नाश होताहै बुद्धि बढतीहै महाकवि होताहै.

गजा गोयोषितः क्षुद्र, जन्तवोयान्तिवश्यताम् । एतद्बीज प्रभावेन, साधकानामसंशयम् ॥ २४ ॥

विद्वद्वादिमहेभानां, स्तंभकुंभविदारणे । एतदेव परं बीजं, कंठीरवपदायते ॥ २५ ॥

भाषा—हाथी, सांढ क्षुद्र जंन्तु इस बीजमंत्रके प्रभावसे वश होतेहै, विद्वानरूप हाथीके कुंभविदारण करनेमे बीज मंत्रके प्रभावसे सिंह सदृश होताहै. [मांत्रीक]

ॐ ह्रीँ देवि नमः तुभ्य—मंभोरुह निभानने । नमन्नभश्चरीमौली, मानिक्यरुणितंक्रमे ॥ २६ ॥

भाषा—यह मंत्ररुप श्लोक है.

लक्षत्रयप्रजापेन, जातीपुष्पैः प्रसिध्यति । सरस्वतीमहादेवी, दिव्याकमलवासिनी ॥ २७ ॥

गद्यपद्य मयीवाणी, गंगानीरानुकारिणी । निर्यातिसततं तस्मात्, यस्यतुष्टा सरस्वती ॥ २८ ॥

भाषा—चमेलीके ताजे फुलोंसे तीन लक्ष जाप करनेसे विन्ध्यकमल वासिनी महादेवि सरस्वति प्रसन्न होती है. जिसपे सरस्वतिकी कृपा है. उसके मुखकमलसे गंगाके प्रवाहके समान अखंड गद्यपद्य मयीवाणी निकलती है.

बंधेबोधेपि तेषांचा—विश्रान्तं जृंभते मति । येषामेषा महादेवी, वरदेभूत मानसा ॥ २९ ॥

प्रबंधे सेतुबंधेन, रामस्येव पताकिनी । तेषां प्रयाति सत्कीर्तिः पारं नीरपतेरपि ॥ ३० ॥

भाषा—प्रबंधके बोधमे अविश्रांत उल्लसायमान बुद्धि होती है. जिसपे सरस्वतीकी कृपा होवे उसे क्या कमी जिस-तरह रामचंद्रकी सेना सेतु बंधसे समुद्रपार होती है. उसी तरह सत्कीर्ति समुद्र पारतक जाती है.

ॐ वाग्वीजंचमायाच, कमला कामवर्णको । सतत्वमादि वर्णाश्च, नमोन्तासर्ववेदिनाम् ॥ ३१ ॥

भाषा—ॐ, वाग्वीज–ऐँ, माया–ऱ्हीँ, कमला–श्रीँ, कामवर्णक–क्लीँ, सतत्व–ऱ्हीँ, सर्ववेदिनाम्आदिवर्णा–असिआउसानमः मंत्रोद्धार ॐ ऐँ ऱ्हीँ श्रीँ क्लीँ ऱ्हीँ असिआउसानमः

एषलोके महामंत्र, पंचानां परमेष्टिनाम् । त्रिभुवनस्वामिनीनाम पुण्यलभ्या महात्मभिः ॥ ३२ ॥

भाषा—इस लोकमे पंचपरमेष्टिका त्रिभुवनस्मामिनीनाम महामंत्र महात्माओंको पुण्यसे प्राप्त होताहै.

लक्षजापप्रदानेन, दशांशेन च होमतः । सिद्धियाति महामंत्रः गुरुसत्वैकशालिनाम् ॥ ३३ ॥

भाषा– पुर्वसेवामें एकलक्ष जाप करना उत्तर सेवामें दशांश आहूति देनेसे महासत्वशालिको मंत्रसिद्धि होतीहै.

मेघाकृष्टिं घटस्तंभं, प्रतिमाचालनं तथा । करोत्येष मनुष्याणां, मनोवांछितसिद्धिदः ॥ ३४ ॥
राजवश्यं देववश्यं, वश्यंच सुरयोषिताम् । वश्याकर्षणदक्षोयं, सर्ववश्यविधायकः ॥ ३५ ॥

भाषा—यहमंत्र मेघाकर्षण, घटस्तंभ, प्रतिमाचालन तथा मनुष्यको मनवांछीत सिद्धि प्रदान करता है राजवश्य, देववश्य, देवांगना वश्य करता है, वश्याकर्षणमें दक्ष है. सर्व प्रकारका वश्य करता है.

ॐ ऐं माययोपेतं, पद्मासतत्व कामदम् । ब्लूँ कलिकुंड नाथाय, सौंर्ह्रीँ च नमः इत्यपि ॥ ३६ ॥

भाषा—ॐ ऐं माया—र्ह्रीं, पद्मा—श्रीँ, सतत्व—र्ह्रीँ कामदं—क्लीँ, ब्लूँ कलिकुंडनाथाय ॐ, र्ह्रीँ नमः मंत्रोद्धारः—ॐ ऐं र्ह्रीँ श्रीँ र्ह्रीँ क्लीँ ब्लूँ कलिकुंडनाथाय ॐ र्ह्रीँ नमः

श्रीकालिकुंडदंडस्य, मूलमंत्रोयमुत्तमः । तपोभिरमलैः लभ्यो—नुचीर्णैः पूर्वजन्मनि ॥ ३७ ॥

भाषा—ये श्रीकलिकुंडपार्श्वनाथका मंत्र पुर्वभवकी निर्मल तपस्यासे प्राप्त होताहै.

श्रीमत्पार्श्व जिनस्याग्रे, यंत्रमाधाय सद्विधिः । जातिपुष्पैः जपेत् लक्षं, मंत्रमेतत् दशांशतः ॥ ३८ ॥
होमेनसाधयेत् धीमान्, सर्वकार्य फलप्रदम् । भक्तिभाजां विशेषेन, शुभाशुभनिरूपकम् ॥ ३९ ॥

भाषा—श्रीमद्पार्श्वनाथभगवानके सन्मुख यंत्रको स्थापनकर सद्विधिसे ताजे चमेलीके फुलोंसे एक लक्ष जाप करे फिर दशांश आहुति देनेसे सर्वकार्यको करनेवाला यहमंत्र सिद्ध होताहै. यहमंत्र भक्तको शुभाशुभ कहताहै.

एक भुक्तोषितो भुत्वा, यद्वाषन्मासकावधि। अष्टोतरशतं जापं, कुर्यादस्य दिनेदिने ॥ ४० ॥

भवद्भुत भविष्याणि, सुखदुःखानि देहिनाम्। सैकत्रावस्थितोवेत्ति, योजनानां शतादपि ॥ ४१ ॥

भाषा—एकासन करते हुये ६ मास पर्यंत हररोज १०८ वार जपेतो एकस्थानमे रहते हुये १०० योजनकी बात जैसे सुखदुःख भुतभविष्य वर्तमान आदि जानने लगता है.

ब्रह्मचर्यः भृतः पंच—वर्षाणि ध्यायतः सतः। सद् ध्यान ध्यान निष्टस्य, विकथारहितस्यच ॥ ४२ ॥

पलं पलं सुवर्णस्य, ददात्येषोनुवासरम्। व्ययेतु तच्चकर्तव्यं, नधर्तव्यं दिनान्तरे ॥ ४३ ॥

धृतेनहीयते सिद्धिः, सिद्धि वर्धेत तद्व्ययात्। व्ययोत एव कर्तव्यः, सत्पात्रादौ मनीषिभिः ॥ ४४ ॥

भाषा—ब्रह्मचर्यको धारन करता हुवा पांचवर्षतक सद्ध्यान निष्टहोके तथा विकथा रहित होके जपे तो प्रतिदिन पलपल सुवर्ण देता है, वह सर्व सत्पात्रादीमें दररोज खर्च करदेना बासी न रखना बासी रखनेसे सिद्धि कम हो जाती है.

ॐ शून्य द्वयं षष्ट—स्वराद्यं बिन्दुसयुतम। पुनः शून्यः द्वयं ह्येका-दशस्वर समन्वितम् ॥ ४५ ॥

सप्तवर्गादिमंवर्णं, षष्टस्वर विराजितम्। बिन्दुपेतंच झाँ हूँ, फुडिति वर्ण विभूषितम् ॥ ४६ ॥

भाषा—ॐ, शून्यद्वयं—दो हकार, षष्ठ स्वराद्यंबिंदू संयुतम्—पांचवा स्वर [उ] बिन्दुसहितमीलाना, शून्यद्वयं—दोह-कार, ह्येकादशस्वर समन्वीतम्—ग्यारवास्वर (ए) मिलाके, सप्तवर्गादिमंवर्ण—सातवर्गके आदिकेवर्ण (क, च, ट, त, प, य, श) षष्टस्वर विभूषितम्—छट्टास्वर (ऊ) सहित, बिन्दुपेतंचं—बिंदु अनुस्वार देकर, झाँ, हूं, फुडितिवर्ण विभूषि-त—फट, मंत्रोद्धारः—ॐ हुं हुं हें हें कूं चूं टूं तूं पूं यूं शूं झाँ हूं फट्

सर्वकर्मकरं मंत्रं, श्रीमत्पार्श्वजिनेशितुः । लक्षजापप्रदानेन, साधयित्वा स्फुटं कुरु ॥ ४७ ॥

राजद्वारे व्यवहारे, सभायां देशनाविधौ । विद्वद्विवादवेलायां, परविद्यांतकर्मणि ॥ ४८ ॥

वश्ये विद्वेषणे मोहे, पापोच्चाटणकर्मणि । तीर्थे प्रभावनादौच, रुष्टानुनयकर्मणि ॥ ४९ ॥

एषएव महामंत्रो, महाकल्याणकारकम् । सर्वदा सर्व कार्येषु, स्मरणीया मनीषिभिः ॥ ५० ॥

भाषा—सर्व कार्यको करनेवाला श्रीपार्श्वनाथभगवानका ये मंत्र एक लक्ष जाप करनेसे सिद्ध होताहै. ये मंत्र राज-दरबारमें, व्यवहारमें, सभामें, व्याख्यानदेनेमें, विद्वानसे वादविवाद करनेमें, दुसरेकी विद्या नष्ट करनेमें, वश्य, विद्वेषण, मोह तथा पापीयोंका उच्चाटन करनेमे, तीर्थकी प्रभावना आदि करनेमे, रुठे हुयेको मनानेमें काम आतीहै. ऐसा यह महाकल्याणकारक महामंत्र सर्वदा सर्व कार्यमे ज्ञानी मनुष्यको स्मरण करना चाहिये.

इति दशपूर्वधराचार्य श्रीभद्रगुप्तविरचितायां श्रीविद्यारत्नमहानिधौ अनुभवसिद्धमंत्र
द्वात्रिंशिकायां शुभाशुभादिमंत्राष्टक वर्णनोनाम चतुर्थोधिकारः

अथातः संप्रवक्ष्यामि, गुरुशिष्य शुभाशुभम्। येनविज्ञान मात्रेण, कल्याणं जायते द्वयोः ॥ १ ॥

भाषा—अबमैं गुरुशिष्यका शुभाशुभ वर्णन करुंगा जिसके जाननेसे दोनोका कल्याण होता है.

गुरुनाज्ञात तत्वेन, सकलागमवेदिना। शंशांकशान्तचित्तेन, क्षमागुणविराजिना ॥ २ ॥

भाषा—सकलागमका जानकार तत्वज्ञानी चन्द्रके समान शान्त, चित्तवाले तथा क्षमा गुण विराजित गुरु होते है.

पूर्वमात्महितं ज्ञात्वा, सूरिणा गुणभूरिणा। शिष्यस्यापि हितं चिन्त्यं, दातुकामेन किञ्चन ॥ ३ ॥

भाषा—बहुत गुणवाले आचार्योंनें पहले आतमहित जानके शिष्यको मंत्र देनेकी इच्छासे उसकाभी हित विचारना.

सिद्धं साध्यंचविज्ञेयं, सुशुद्धं शत्रुरूपिणं। मृत्युदं चैवनिःशेषं, मंत्रंमंत्रविदो विदुः ॥ ४ ॥

भाषा—सिद्धं साध्यं सुशुद्धं शत्रुरूपिणं मृत्युदं ऐसे पांच हिस्सोमें सब मंत्रको विभक्त करना ऐसा मंत्रवादि कहते है.

सिद्धं सारफलंज्ञेयं, दातव्यं भक्तिशालिने। साध्यं साध्यफलं चापि, देयं तदपि सूरिणा ॥ ५ ॥

स्वल्पं फलं सुसिद्धंच, मंत्रो यच्छति देहिनाम्। सोपिकस्यापिदातव्य—स्तद्धितस्य शरीरिणः ॥ ६ ॥

शत्रुरुपीच शत्रुस्तु, मृत्युदो मृत्यु नामकः । नैमौकस्यापि दातव्यौ, परलोकफलार्थिभिः ॥ ७ ॥

भाषा—सिद्ध सारफल देनेवाला जानना साध्य—साध्यफल देनेवाला जानना भक्तिशालीको आचार्य महाराजने देना, सुसिद्ध स्वल्प फल देनेवाला मंत्र जानना वहांभी शरीरधारीको उसका हित विचारते हुये देना, शुत्रुरुपी—शत्रु समझना. मृत्युद—मृत्युको देनेवाला है. परलौकीक फलकी इच्छा करनेवाले आचार्योंने यहदोनो मंत्र किसीको नहीं देना.

अ इ उ ए ओ पंचैतान्, स्वरान् कोष्टकपंचके । कादिकान् हान्त वर्णान्च, डढणाक्षरवर्जितान् ॥ ८ ॥

वर्णक्रमेण संलिख्य, मातृकाचक्र मुज्वलम् । योग्यायोग्यं ततोचिन्त्यात्, मंत्रं शिष्यद्वयोरपि ॥ ९ ॥

भाषा—अ, इ, उ, ए, ओ, ये पाच स्वर पांच कोठेमें लिखके उसके नीचे क, से लेकर ह पर्यंत के वर्ण डढण अक्षर छोडके वर्णक्रमसे लिखना; यह मातृका चक्र लिखकर गुरुशिष्यदोनोनें योग्यायोग्य विचार करना.

सिद्धं वा यदिवा साध्यं, मंत्र प्राप्य दुरासदम् । शिष्येनापिविधातव्या, सद्गुरो भक्तिरीदृशी ॥ १० ॥

भोजनं वस्त्र दानंच, पात्रदानं तथैवच । दानं सारसुवर्णस्य । विधातव्यं मनीषिना ॥ ११ ॥

पादप्रक्षालनं चैव, पृष्टिसंवाहनंतथा । स्वयमासनदानंच, कर्तव्यं सद्गुरोरिह ॥ १२ ॥

भाषा—सद्गुरुसे, दुर्लभ ऐसे सिद्ध वा साध्य मंत्रप्राप्तकरके शिष्यने गुरुभक्तिकरनी चाहिये, अन्नपान, वस्त्र, पात्र, आदिका दानदेना, सुवर्ण मुद्रासे ज्ञानपुजा करनी गुरुमहाराजका पगधोना, अंगदबाना, स्वयं उठकर आसनदान

आदि करना चाहिये.

दक्षो जितेन्द्रिय धीमान्, कोपानलजलोपमः । सत्यवादी विलोभश्च, मायामदविवर्जितः ॥ १३ ॥

मानत्यागी दयायुक्तः, परनारी सहोदरः । जिनेन्द्रगुरुभक्तश्च, मंत्रग्राही भवेन्नरः ॥ १४ ॥

भाषा—हुशियार, जितेंद्रिय, बुद्धिमान, क्रोधरहित, सत्यवादी, निर्लोभी, मायामद रहित, मानत्यागी, दयावाला, परनारी सहोदर, जिनेंद्रभक्त, गुरुभक्त इतने गुणोवाला मनुष्य मंत्रग्रहण करनेंवाला होसकता है.

शुभेलग्ने शुभेवारे, तिथिनक्षत्र चन्द्रके । मंत्रदानं विधातव्यं, गुरुपूजापुरस्सरम् ॥ १५ ॥

दीपोत्सवे व्यतिपाते, चंन्द्रसुर्योपरागयोः । विशेषेन विधातव्यं । मंत्रदानं यथाविधि ॥ १६ ॥

भाषा—शुभलग्न, शुभवार, शुभतिथि, शुभनक्षत्र. तथा शुभचंद्र इत्यादि वेलामें मोटी पूजा पढाकर शिष्यको मंत्र देना, विशेष करके दीपमाला, व्यतिपात, सुर्यचंद्रके ग्रहणमे यथाविधि मंत्रदेना.

श्रुतसागरमालोक्य, महारत्न समामया । एते मंत्रा समाख्याता, योग्यानां हितकाम्यया ॥ १७ ॥

परीक्षितगुणानां तु, भक्तियुक्तशरीरिणाम् । श्रद्धावंतां प्रदातव्या, सुखमिच्छद्भिरात्मनः ॥ १८ ॥

भाषा—योग्य जीवोंके हितके लिये आगमसमुद्रका अवगाहन करके महारत्न तुल्य इनमंत्रोका कथन किया है. इसे अपने आत्मकल्याणकी इच्छारखनेवाले गुरुने, जिसके गुणोंकि परीक्षा कीहैऐसे भक्तिवाले श्रद्धावाले शिष्यको मंत्र देना.

मायाहंकार युक्तेषु, श्रद्धाहीन दुरात्मसु । निर्गुणेषु य एतास्तु, मंत्रान् दाता स्वदोषतः ॥ १९ ॥
सोनन्तं लप्स्यतेसद्य, संसारं दुःखरूपिनम् । अनन्तानि च दुःखानि, शिस्यस्यापि प्रदास्यति ॥ २० ॥
इति ज्ञात्वा प्रयत्नेन, एकांते गुरुभक्तितः । भक्तियुक्ताय शिष्याय । दद्याद् मंत्रमनुत्तरम् ॥ २१ ॥

भाषा—मायी, अहंकारी, श्रद्धाहीन, दुष्ट, निर्गुण इत्यादिको मंत्र देवेतो देनेवाला दोषीहै. वो अनन्त संसारके दुःखमें अनंतवार भ्रमण करेगा. शिष्यभी अनंत संसारके अनन्त दुःखका अनुभव करेगा. ऐसा जानकर गुरुमहाराजने भक्त शिष्यको गुरुभक्तिके साथ एकांतमें मंत्र देना चाहिये.

द्वात्रिंशिकाया यःकल्पं, भक्तियुक्तःकरिष्यति । सद्भ्यस्तं सदातस्य, सर्वज्ञत्वं भविष्यति ॥ २२ ॥
इहलोकेपिदुःखानि, दारिद्रानिच दुरतः । क्षयंतस्य प्रयास्यन्ति, योमुष्मै भक्तिबंधुरः ॥ २३ ॥
तस्मादेतांमहामंत्र, द्वात्रिंशिकांमहामतिः । अनाख्येयामयोग्यनां, स्वयंनित्यं विभावयेत् ॥ २४ ॥

भाषा—जो मनुष्य भक्तियुक्तद्वात्रिंशिका कल्पका अभ्यास करताहै वह सर्वज्ञके समान् हो जाता है. उसका इस लोककी दरीद्रावस्था आदि दुख दुरसेही क्षय होता है. इसलिए महामति (मुनि) ने स्वयं विचारकरके अयोग्य मनुष्यको नही देना चाहिये.

❁ अथ अष्ट कर्मप्रयोग विधिविधानम् ❁

शान्तिकर्म	पौष्टिक कर्म	वश्यकर्म	आकर्षणकर्म	स्तंभनकर्म	मारणकर्म	विद्वेषणकर्म	उच्चाटनकर्म
वरुणदिशि	नैऋत्यदिशि	कुबेरदिशि	यमदिशि	पूर्वाभिसन्मुख	इशानदिशि	अग्निदिशि	वायव्यदिशि
अर्धरात्रि	प्रभातकाल	पूर्वाह्नकाल	पूर्वाह्नकाल	पूर्वाह्नकाल	संध्याकाल	संध्याकाल	अपराह्नकाल
ज्ञानमुद्रा	ज्ञानमुद्रा	सरोजमुद्रा	अंकुशमुद्रा	शंखमुद्रा	वज्रमुद्रा	प्रवालमुद्रा	प्रवालमुद्रा
पंकजासन	पंकजासन	स्वस्तिकासन	दंडासन	वज्रासन	भद्रासन	कुर्कुटासन	कुर्कुटासन
स्वाहापल्लव	स्वधापल्लव	वषट्पल्लव	वौषट्पल्लव	ठटपल्लव	घेघेपल्लव	हुं पल्लव	फट्पल्लव
श्वेतवस्त्र	श्वेतवस्त्र	रक्तवस्त्र	उदपार्कवस्त्र	पीतवस्त्र	कृष्णवस्त्र	धूम्रवस्त्र	धूम्रवस्त्र
श्वेतपुष्प	श्वेतपुष्प	रक्तपुष्प	रक्तपुष्प	पीतपुष्प	कृष्णपुष्प	धूम्रपुष्प	धूम्रपुष्प
श्वेतवर्णध्यान	श्वेतध्यान	रक्तध्यान	रक्तध्यान	पीतध्यान	कृष्णध्यान	धूम्रध्यान	धूम्रध्यान

पूरकयोग	पूरकयोग	पूरकयोग	पूरकयोग	कुंभकयोग	रेचकयोग	रेचकयोग	रेचकयोग
दीपनआदिनाम	दीपनआदिनाम	संपुटमध्यनाम	ग्रंथवर्णांतरितनाम	वैदर्भाद्यक्षरमध्यनाम	रोदनआदिमध्यांतनाम	पल्लवान्त्यनाम	पल्लवान्त्यनाम
स्फटिकमणि	मुक्ताफल	प्रवालमणि	जीवापुत्ता	जीवापुत्ता	जीवापुत्ता	जीवापुत्ता	जीवापुत्तमाला
मध्यमांगुलि	मध्यमांगुलि	अनामिका	कनिष्ठिकांगु.	तर्जन्यांगुलि.	तर्जन्यांगुलि.	तर्जन्यांगुलि.	तर्जन्यांगुलि.
दक्षिणहस्त	दक्षिणहस्त	वामहस्त	दक्षिणहस्त	दक्षिणहस्त	दक्षिणहस्त	दक्षिणहस्त	दक्षिणहस्त
वामवायु	वामवायु	वामवायु	दक्षिणवायु	दक्षिणवायु	दक्षिणवायु	दक्षिणवायु	दक्षिणवायु
शरदृतु	हेमंतऋतु	वसंतऋतु	वसंतऋतु	वसंतऋतु	शिशिरऋतु	ग्रीष्मऋतु	वर्षाऋतु
मध्यरात्र	प्रातकाल	पूर्वाह्नकाल	पूर्वाह्नकाल	पूर्वाह्नकाल	संध्याकाल	मध्यदिन	अपराह्नकाल
जलमंडल	जलमंडल	जलमंडल	अग्निमंडल	पृथ्वीमंडल	वायुमंडल	वायुमंडल	वायुमंडल

इति सम्पूर्णम्

इति दशपुर्वाधराचार्य श्रीभद्रगुप्तविरचितायां श्रीविद्यारत्नमहानिधौ अनुभवसिद्धमंत्र
द्वात्रिंशिकायां गुरुशिष्यशुभाशुभ संशुचकोनाम पंचमोधिकारः

अ	इ	उ	ए	ओ
क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	त	थ	द
ध	न	प	फ	ब
भ	म	य	र	ल
व	श	ष	स	ह
मा	तृ	का	च	क्रं

प्र.	१	२	३	४	५
द्वि.	५	१	२	३	४
तृ.	४	५	१	२	३
च.	३	४	५	१	२
पं.	२	३	४	५	१

इति विद्यारत्नमहानिधिसम्पूर्णम्